भगत रविदास – सबद २३

नामु तेरो आरती मजनु मुरारे ॥

रागु धनासरी, भगत रविदास, गुरु ग्रंथ साहिब, ६९४

नामु तेरो आरती मजनु मुरारे ॥
हरि के नाम बिनु झूठे सगल पासारे ॥१॥ रहाउ ॥
नामु तेरो आसनो नामु तेरो उरसा नामु तेरा केसरो ले छिटकारे ॥
नामु तेरा अंभुला नामु तेरो चंदनो घसि जपे नामु ले तुझहि कउ चारे ॥१॥
नामु तेरा दीवा नामु तेरो बाती नामु तेरो तेलु ले माहि पसारे ॥
नाम तेरे की जोति लगाई भइओ उजिआरो भवन सगलारे ॥२॥
नामु तेरो तागा नामु फूल माला भार अठारह सगल जूठारे ॥
तेरो कीआ तुझहि किआ अरपउ नामु तेरा तुही चवर ढोलारे ॥३॥
दस अठा अठसठे चारे खाणी इहै वरतणि है सगल संसारे ॥
कहै रविदासु नामु तेरो आरती सति नामु है हरि भोग तुहारे ॥४॥३॥

सार: चिंतन, मनन और आत्मनिरीक्षण हमें भीतर से बाहर की ओर, सच्चाई से जीने की शक्ति देते हैं। एक पल के विराम से आरंभ होकर यह अभ्यास हमारी स्वचालित प्रतिक्रियाओं को बाधित करते हैं और विचारों तथा प्रतिक्रियाओं के बीच अंतराल रचते हैं। चिंतन हमें गहन सवालों को खोजने के लिए प्रेरित करता है ताकि यह समझा जा सके कि वास्तव में हमारा ध्यान किस पर देने योग्य है। मनन हमें अनुभवों को फिर से देखने और उनके सार को समझने की अनुमति देता है जबकि आत्मनिरीक्षण हमारे इरादों और प्रेरणाओं को स्पष्ट करता है। यह तीनों अभ्यास साथ मिलकर, बिना सोचे-समझे किये काम को स्पष्टता और उद्देश्य से निर्देशित विवेकपूर्ण कर्मों में रूपांतरित करते हैं।

नामु तेरो आरती मजनु मुरारे ॥

सर्वव्यापी स्रोत पर चिंतन करना ही वास्तव में आरती और पवित्र स्नान का काम है। यह इस पर ज़ोर देता है कि सजगता स्वयं ही ज्ञान-बोध और शुद्धता का कर्म है।

हरि के नाम बिनु झूठे सगल पासारे ॥१॥ रहाउ ॥
सर्वव्यापी स्रोत पर चिंतन बिना बाकी सभी आडंबर मिथ्या हैं। यह इंगित करता है कि एकत्व का सच्चाई से अभ्यास किए बिना बाह्य कर्म केवल औपचारिक प्रदर्शन रह जाते हैं। (१)(विराम)

नामु तेरो आसनो नामु तेरो उरसा नामु तेरा केसरो ले छिटकारे ॥
सर्वव्यापी स्रोत पर चिंतन करना पूजा के आसन का उपयोग करने जैसा है जबकि सर्वव्यापी ऊर्जा का चिंतन ओखली–मूसल के समान है। सार्वभौमिक एकता पर आत्मनिरीक्षण उस केसर के जैसा है जिसे हम ऊपर से छिड़कते हैं। यह दर्शाता है कि मानसिक स्थिरता विकसित करना और ज्ञान को अपनाना मात्र अनुष्ठानों से कहीं अधिक हमारे विचारों को परिष्कृत करता है।

नामु तेरा अंभुला नामु तेरो चंदनो घसि जपे नामु ले तुझहि कउ चारे ॥१॥
सर्वव्यापक स्रोत पर चिंतन जल के समान है। सर्वव्यापी ऊर्जा पर मनन करना चंदन घिसकर लेप बनाने जैसा है और सार्वभौमिक एकता पर आत्मनिरीक्षण सर्वव्यापी चेतना को अर्पित करने जैसा है। यह प्रतीक है कि आध्यात्मिकता ज्ञान से गुंथे हुए विचारों की तरलता से उत्पन्न होती है जो विकास को बढ़ावा देती है। (१)

नामु तेरा दीवा नामु तेरो बाती नामु तेरो तेलु ले माहि पसारे ॥
सर्वव्यापी स्रोत पर चिंतन करना दीपक जैसा है। सर्वव्यापी ऊर्जा पर विचार करना बाती के समान है और सार्वभौमिक एकता पर आत्मनिरीक्षण उसके अंदर का तेल है। यह प्रतीक है कि विवेक से पोषित होने पर अंतरात्मा प्रबुद्ध होती है।

नाम तेरे की जोति लगाई भइओ उजिआरो भवन सगलारे ॥२॥
जब चिंतन की ज्योति जलाई जाती है तो यह हमारे आंतरिक निवास को रोशन करती है। यह बताता है कि जब हम अपने भीतर की सहज प्रतिभा को जगाते हैं तब हमारे विचार अधिक स्पष्ट हो जाते हैं जिससे हमारी मानसिकता पूरी तरह बदल जाती है। (२)

नामु तेरो तागा नामु फूल माला भार अठारह सगल जूठारे ॥
सर्वव्यापी स्रोत पर चिंतन करना धागे जैसा है और सर्वव्यापी ऊर्जा पर विचार करना फूलों की माला के समान है। सभी भौतिक अभिव्यक्ति स्वाभाविक रूप से नश्वर और अशुद्ध है। यह पूजा के रूप में निरंतर सजगता की अविनाशी भेंट के पक्ष में नश्वर भेंटों को अस्वीकार करता है।

तेरो कीआ तुझहि किआ अरपउ नामु तेरा तुही चवर ढोलारे ॥३॥
हर रचना प्राकृतिक नियम से बहती उसकी ही रचना है तो फिर बदले में क्या दिया जा सकता है। सर्वव्यापी स्रोत पर ध्यान करना ऐसा है जैसे कोई पंखा स्वयं को हवा दे रहा हो। यह चेतना की एकात्मकता को दर्शाता है। (३)

दस अठा अठसठे चारे खाणी इहै वरतणि है सगल संसारे ॥
दसों दिशाओं, आठ लोकों, अड़सठ तीर्थों में और जन्म की चारों योनियों में, वही गूंज पूरे ब्रह्मांड में घूमती है। यह बिना किसी ऊँच-नीच के सार्वभौमिकता को दिखाता है और इस बात पर ज़ोर देता है कि वास्तविकता किसी खास जगह, रीति-रिवाज या पहचान तक सीमित नहीं है।

कहै रविदासु नामु तेरो आरती सति नामु है हरि भोग तुहारे ॥४॥३॥
रविदास कहते हैं कि इस सर्वव्यापी गूंज पर चिंतन करना भक्ति का एक रूप है और सच्चे चिंतन से पता चलता है कि सार्वभौमिक चेतना स्वयं को एक भोग और अर्पण के रूप में व्यक्त करती है। (४)(३)

तत्त्व: भक्त रविदास ऐसी रूपांतरकारी आरती की वकालत करते हैं जिसमें आंतरिक पूजा को प्राथमिकता दी जाती है। इस साधना में, दीपक मन का प्रतीक है, बाती ज्ञान का प्रतिनिधित्व करती है और तेल संकल्प का प्रतीक है। पारंपरिक पूजा सामग्री को नाम, यानी आंतरिक गूंज के सार से बदलकर, वह कहते हैं कि रौशनी किसी बाह्य क्रिया से नहीं बल्कि यथार्थ की पहचान से उत्पन्न होती है। बाहरी तत्वों को नज़रअंदाज़ करने के बजाय, वह उन्हें एक ही, एकीकृत सामंजस्य के प्रतिबिंब

के रूप में स्वीकार करते हैं जो सभी चेतना के भीतर बहता है और हमारी आध्यात्मिक यात्रा को समृद्ध करता है।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com